दादा भगवान की झलकियां

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

- अनेक जन्मों के आत्मलक्ष्यी पुरुषार्थ के फलस्वरुप, सभी दोषों की अशुद्धि विलय होने पर, आवरण हटते ही 1958 के जून महीने में सुरत रेल्वे स्टेशन के तीन नम्बर प्लेटफॉर्म पर, भादरण (गुजरात) निवासी कोट, टोपी, धोती धारी सादगीयुक्त परिवेश वाले श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल के देह मंदिर में कुदरती आत्मज्ञान प्रकाश आलोकित हुआ। शुद्ध ज्ञान, दर्शन चारित्र स्वरुप परमात्म प्रकाश से प्रकाशित विश्व में **''दादा भगवान''** और देहमंदिर **'ज्ञानी पुरुष'** के नाम से सुविख्यात हुए।
- 1962 में उनके भतीजे के सुपुत्र (स्व.) चंद्रकांत भाई के निमित्त से यह दिव्य ज्ञान प्रकाश विश्व के कल्याण के लिए उद्घाटित हुआ।
- 1974 में **'दादा भगवान'** की प्रथम गुरुपूर्णिता और 1975,1976 के गुरुपूर्णिता महोत्सव सुरत में ही मनाए गये।
- अक्रम विज्ञानी, संगमेश्वर, युगद्रष्टा **'दादा भगवान'** की स्वयं की यह पुण्य भूमि थी, जहाँ उनके पावन चरण बार–बार पड़े।
- 2 जनवरी 1988 के पावन दिन अविनाशी **'दादा भगवान'** ने ज्ञानी पुरुष 'ए.एम.पटेल' के देह मंदिर से विदाई ली।
- 5 जनवरी 1988 के ऐतिहासिक दिन देश–विदेश के हजारों सत्संगियों की उपस्थिति में सुखद की शैया पर उनके दिव्य पार्थिव देह के अंतिम संस्कार सुरत में ही सम्पन्न हुए। **'दादा भगवान'** के पावन चरणों से चेतना स्पंदित इस भूमि पर ही **'दादा भगवान'** समाधि मंदिर अर्थात् सत्त स्थानक का निर्माण हुआ।
- मुमुक्षुओं को यहाँ दर्शन करते समय, **'दादा भगवान'** की सूक्ष्म चेतना की उपस्थिति और अद्भूत आत्मोल्लास का अनुभव होता है। यहाँ बिना कोई भेदभाव सम्पूर्ण मानव जाति आत्म–कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो सकती है।